International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 5 May-June 2024

भारतीय साहित्य में लोक की अवधारणा एवं स्वरुप

डॉ. बोईनवाड कृष्णा बाबुराव
दिगंबरराव बिंदू कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, भोकर
Corresponding Author: डॉ. बोईनवाड कृष्णा बाबुराव
DOI- 10.5281/zenodo.12704074

सारांश:

भारतवर्ष में सबसे जाता लोक ग्राम में बसता है। लोक से संबंधित अर्थ है ग्रामीण - जनसमुदाय तथा लोग या लोक, जिसे गाँव में बसे जनजीवन या मनुष्य जाति वर्ग को सम्बोधित किया जाता है। भारत की अपनी संस्कृति, परम्परा रही है तथा भारतीय लोक मानस की अपनी अलग सी पहचान है। जिसमें रहन-सहन, रीती-रिवाज, रंग छठा, प्रथा-परम्परा आदि अनेक कार्य कलापों से भारतीय लोक अपनी पहचान रखता है। कहा जाता हैं कि पाश्च्यात्य देशों के अनुकरण से भारत में आधुनिकीकरण का विकास हुआ है लेकिन यह कितपय समीचीन हैं। आज आधुनिकता तथा उत्तर आधुनुकता की ओर बढ़ते हुए भी भारतीय जन मानस की ग्राम कि संस्कृति वैसे ही प्रतीत होती। वह संस्कृति भारतीय संस्कृति को ओढ़े हुए है। वही लोकमानस हैं जो भारतीयता की पहचान रखते है। शहरीकरण तथा औद्योगिकिकरण से अनेक बदलाव प्रकट हुए है लेकिन संस्कृति तथा लोक के जीवन में आये बदलाव को देखना भी जरुरी है। शिक्षित तथा अशिक्षित लोक होने के बावजूद भी वह अपनी संस्कृति का रखवाला है। भारत का एक विशाल समुदाय आँचल, गाँव, जनपद में वास्तव करता हैं कई समुदाय तो ऐसे प्रतीत होते हैं जिनका शहर से कोई मेल नहीं होता है। यहीं वह समुदाय है जो लोक कहलाता है। जबकि तत्कालीन समय में लोक की ग्राह्यता मानव समाज, लोग, जनता, प्रवासी(दूर देसी रहनेवाला) आदि के तौर पर हो रही है। अतः लोक की मूल संवेदना तथा व्याख्या बदलती नजर आती है।

कहा जाता है कि भारत एक विविधता का देश है। इस विविधता के चलते भारत में अनेक कला-गुनोंका विकास हुआ है जिसे हम लोक कला, लोकोन्नति कहते है। भारत में अनेक धर्म, जाति, संप्रदाय, विविध संघटन आदि के मद्य भारतीय लोक का वास्तव्य है। प्राचीन काल से लेकर अभी तक 'लोक' समुदाय में रहते आए है। उसी समुदाय की अपनी-अपनी बोली, भाषा, रहन-सहन, रीती-रिवाज, खान-पान आदि अलग है। इसी के चलते समुदाय में मनोरंजन के लिए कुछ कला को आगे लाया गया जिसमें नृत्य, गायन, खेल, भांगड़ा, विविध रिवाज आदि। जबकि आगे चलकर वही उनकी अपनी संस्कृति कहलाई, कहते हैं की मनुष्य जाति का रहन सहन परम्परागत आगे बढ़ता हैं उसी प्रकार लोक की संस्कृति एक पीढ़ी ले लेकर दुसरे पीढ़ी की देन बन जाती है। चाहे मौखिक रूप में हो या खेल, नृत्य या लिखित रूप में वह परम्परागत रहती है। कहा जाता हैं कि जैसे जैसे मनुष्य शिक्षित होता गया और अपनी प्रगल्भ प्रतिभा से वह इन सभी कार्य कलापों को वह मौखिक या लिखित रूप देता गया और वह लिखित रूप ही लोक साहित्य कहलाया गया।

भारतीय साहित्य एक विशाल साहित्य है जिसका इतिहास काफी पुराना प्रतीत होता हैं । वैसे भारतीय साहित्य में अनेक भाषाओं का साहित्य प्राप्त है। भारतीय साहित्य में सभी भाषा का साहित्य एवं उसका विकास समान समय में विकसित हुआ है। कहा जाता हैं कि भारतीय साहित्य के निर्माण में अनेक सम्प्रदायों का कार्य महत्वपूर्ण है, उसी संप्रदाय के प्रचलन तथा उनकी मौखिक तथा लिखित है जो भारतीय साहित्य को बहुत बड़ी देन है। इनमें नाथ संप्रदाय सबसे उल्लेखनीय कहा जाता हैं। डॉ. नगेन्द्र अनुसार "भारतीय वाङ;मय में नाथ-साहित्य एक व्यापक प्रवृत्ति विद्यमान है जो उत्तरी-पश्चिमी, पूर्वी और मध्यदेशीय सभी भाषाओं में परिव्याप्त है।"[i] इसी प्रकार नाथों ने अपनी बानी से संसार में गायन तथा मौखिक गीतों का प्रसार कर जनमानस की बोली को भाषा साहित्य का आधार बनया। आगे चलकर चारण काव्य, संत काव्य जो मध्यकालीन भारतीय साहित्य का केंद्र बिंदु सिद्ध हुआ है भक्ति का मार्ग तथा भक्त संत कवियोंने अपनी वाणी को साहित्यिक रूप प्रदान किये है जिसमें कबीर, सूरदास और तुलसी सर्वश्रेष्ट उदहारण बने जिनकी वाणी में एक तरफ समाज का अन्धकारपन एवं जाति, बाह्यडम्बर का विरोध तथा दूसरी ओर राम की महिमा का उल्लेख मिलता है। इससे आगे प्रेमाख्यान काव्य जो सूफी की बानी कहलाता है। इन सभी का एकत्रित रूप यानि लोक का मौखिक या लिखित रूप जो हमें लोक साहित्य की ओर दृष्टिगोचर करता है।

भारतीय साहित्य की आधारशिला ही 'लोक' है। भारतीय लोक में मुख्य रूप से आस्था-अनास्था, मिथक, अंधविश्वास, लोकाचार, धार्मिक आस्थाएं, व्रत-त्योहार, रीती-रिवाज, भाषा, लोकगीत आदि को पाया जाता है। जिसे विस्तृत रूप से देखा जा सकता है।

सामान्य रूप से 'लोक' का अर्थ ग्राम तथा जनपद में वास्तव करने वाली मनुष्य जाति के लिए किया जाता है। कालान्तरण में लोक के लिए जैसे लोक, प्रजा, जनसमुदाय, लोग तथा तत्कालीन समय में जनता शब्द का उपयोग हुआ है । प्राचीन काल से लेकर तत्कालीन समय में मुख्य रूप से

लोक शब्द का उपयोग हुआ है। आधुनिक तथा भूमंडलीकरण के दौर में अभी जनता शब्द ही प्रमुख और प्रचलित है।

प्राचीन काल में अनेक जगह लोक शब्द का प्रयोग किया गया है। लोक शब्द का प्रयोग दो रूप में लिया जाता है पहला इहलोक, परलोक या त्रिलोक तथा दूसरा जनसामान्य के लिए लोक या लोग शब्दप्रयोग होता हैं। लोक शब्द को ऋग्वेद में भी पाया गया हैं जिसका अर्थ सामान्य जनता के लिए किया गया हैं। अथर्ववेद में पार्थिव तथा दिव्य इन दो लोकों को दर्शाया गया है । आगे नाट्यशास्त्र में भरतमुनि 'लोकधर्मिता' की बात की है। गोस्वामी तुलसीदास अपने रामचरितमानस में राम एक लोक का अधिष्टाता के रूप को दिखाकर लोक तथा वेद की चर्चा की है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी की दृष्टी से लोक का अर्थ शुक्ल साधारण जनता के रूप में लेते हैं और हजारीप्रसाद द्विवेदी लोक शब्द के रूप में जनता शब्द का प्रयोग करना उचित समझते है।

लोक मूल संस्कृत शब्द से उत्पन्न है और उसी का दूसरा रूप 'लोग' जो अपभ्रंश से उत्पन्न हुआ है। संस्कृत के 'लोक दर्शन' धातु में 'घत्र' शब्द के आने से 'लोक' शब्द का निर्माण हुआ है इस धातु का अर्थ है देखना और इसका अन्य पुरुष एक वचन का रूप 'लोकते' है इसका सम्मिलित रूप लोक का अर्थ होता हैं 'देखने वाला'। मुख्य रूप से लोक का अर्थ होता हैं संसार या समाज या समुदाय में रहनेवाली मनुष्य जाति।

वर्तमान समय में लोक के लिए लोग या जनता शब्द का प्रयोग प्रचुर मात्रा में होते नजर आता है। अंग्रेजी में 'लोक' शब्द के लिए 'फोक' शब्द का उपयोग किया जाता है। हिंदी में मूल रूप से 'फोक' शब्द के पर्याय में 'लोक' 'जन' तथा 'ग्रामवासी' यानि ग्राम में वास्तव करने वाली जनता के लिए उपयोग किया जाता है।

रघुनाथसिंह के राजतारंगिणी में तृतीय भाग में लोक का उल्लेख मिलता है।

"क्व लोकोव्दहनोत्रध्हभृभृद्योगा नृपात्मजा ।
प्रतिग्रहजलक्लिन्नपाणि: क्वाल्पमना द्विज:"[ii] ।। 12 ।।

"इसका अर्थ वाज लोक रक्षा का भार उठाने में समर्थ किसी भूपति को समर्पित करे योग्य..." आदि से लिया गया है। पाणिनिकालिन भारतवर्ष में लोगों के वास्तविकता के बारे में भाष्य है जिसमे लोक शब्द का प्रयोग मिलता है-

"लोको येष्वद्य केपांचित्तत्त्वमालोक्य सस्मित:"[iii] ।। 372 ।।

जिसका अर्थ उन्होंने " मैं जानता हूँ, कुछ लोगों की आज वास्तविकता को देखकर, लोग आज मुस्कुराते है।" हिंदी साहित्य कोश में लोक के लिए कहा गया है कि "लोक-शब्दकोशों में लोक शब्द के कितने ही अर्थ मिलेंगे, जिसमें से साधारणतः दो अर्थ विशेष प्रचलत है। एक तो वह जिसे इहलोक, पर लोक अथवा त्रिलोक का ज्ञान होता है। वर्तमान प्रसंग में यह अर्थ अभिप्रेत नहीं है। दूसरा अर्थ लोकका होता है जनसामान्य-इसी का हिंदी रूप लोग है। इसी अर्थ का वाचक 'लोक' शब्द साहित्य का विशेषण है।"[iv] हिंदी साहित्य कोश के अनुसार लोक यह शब्द इहलोक या परलोक के आधार से ही लिया गया है। जबकि वर्तमान की बदलती परिस्थिति के अनुसार यह लोक शब्द जनता के लिए उपयोग में लाया जा रहा है जबकि साहित्य में लोक शब्द ही उपर्युक्त माना जा रहा है। बृहत समांतर कोश के अनुसार लोक शब्द के लिए कहा गया है कि -"जनसाधारण को लोक कहा जाता था। इसी से 'लोग' शब्द बना है।"[v] आचार्य शुक्ल अपने इतिहास में लोक की बात करते है उनके लिए लोक या लोग जनता के रूप में आता है। उन्होंने लोक को परिपूर्ण रूप से जाना है और उनके लिए लोकमंगल की बात की है । डॉ. अमरनाथ लोकामंगल शब्द की उत्पत्ति का श्रेय शुक्ल जी को देते हुए कहते हैं कि "'लोकमंगल' शब्द को विशिष्ट अर्थ देने का श्रेय आचार्य रामचद्र शुक्ल को है। लोक-मंगल के दोनों अंशभूत शब्द 'लोक' और 'मंगल' आचार्य शुक्ल को भारतीय परंम्परा के प्रवाह से प्राप्त हुए हैं । सामान्यतः 'लोक' शब्द से तात्पर्य है सामान्य जन और मंगल से तात्पर्य है 'कल्याण', किन्तु यह शब्द आचार्य रामचंद्र शुक्ल के यहाँ नये अर्थ के साथ प्रयुक्त हुआ है। आचार्य शुक्ल ने 'लोक' शब्द का प्रयोग यों तो कई अर्थो में किया है- कहीं 'जगत' के लिए, कहीं 'समाज' के लिए, कहीं 'मानव-जाति' के लिए और कहीं सम्पूर्ण मानव जाति के लिए, किन्तु वह जिस लोक से वे दुःख की छाया हटाना चाहते है, निश्चय ही वह दुखी, पीड़ित और गरीबों का लोक है।"[vi] लोक शब्द के अर्थ के विषय में डॉ. रविन्द्र भ्रमर ने लिखते है कि-" इस शब्द के प्रचलित अर्थ दो है- एक तो विश्व अथवा समाज और दूसरा जनसामान्य अथवा जनसाधारण । साहित्य अथवा संस्कृति के एक विशिष्ट भेद की ओर इंगित करने वाले एक आधुनिक विशेषण के रूप में इस शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपदीय समझा जाता हैं, किन्तु इस दृष्टी से केवल गाँव में ही नहीं वरन नगरों, जंगलों, पहाड़ों और टापुओं में बसा हुआ वह मानव-समाज जो अपने परंम्परा-प्रथित रीति-रिवाजों और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने के कारण अशिक्षित या अल्प सभ्य कहा जाता है, 'लोक' का प्रतिनिधित्व करता है।"[vii] अतः लोक शब्द परिपूर्ण रूप से मानव समाज के लिए उपयोग में लिया जाता है। वहा मनव समाज चाहे गाँव में बसा हो या नगर या शहर तथा टापुओं में बसा हो वह लोक कहलाता है। तत्कालीन अवस्था में लोक लेक के लिए जनता शब्द प्रयोग ही उपयुक्त मात्रा में उपयोग किया जा रहा है। अर्थात लोक के लिए जनता शब्द का उच्चारण ही आवश्यक समझा जा रहा हैं।

भारतीय लोक में अनेक लोकसंस्कृति तथा अनेक घटनाओं का समिश्रण रहा है। अनेक प्रथा-परंम्परा रही है जो अपनी संस्कृति के अनुरूप ढली जाती है। अनेक आस्थाएं मिलती जिनकी अपनी देव संकृति तथा सामाजिक संरचना के आधारपर देवताओं की भी पूजा भोग अलग सा चढाते है। वैसे प्रत्येक लोक में अशिक्षा तथा अंधश्रद्धा पाई जाती है। भारतीय लोक में दिनों के प्रति आस्था को देखा जाता है। शिव, हनुमान, शनि, माँ दुर्गा रविपुत्र सूर्य आदि को लेकर प्रत्येक दिन की अलग पूजा तथा अलग अलग मान्यताओं का मिलन दिखाई देता है। भौगोलिक परिवेश का लोक के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है भौगोलिक परिस्थिति ही उनके जीवन का आधार होती है नदी, नाले पहाड़, झरना, पेड़-पौंधे आदि। श्यामसुंदर दुबे लोक की नर्मदा नदी पर कि आस्था को दिखाते है कि- "नर्मदा के साथ सहज आसक्ति में जो उष्मा है- वह संभतः अन्य नदियों के साथ प्रदर्शित किए

गए संबंधों में नहीं । पतित पावनी वैसे तो सभी नदियाँ हैं- किन्तु पिता तुल्य संरक्षण देनेवाली केवल नर्मदा है-

"नरबदा मैया ऐंसी तो मिली रे
जैसे मिल गए मतारी और बाप रे।"[viii]

लोक को प्रारंभिक कालीन भारतीय संस्कृति में देखना आवश्यक होगा जबकि प्रारंभिक कालीन संस्कृति हीं मानव सभ्यता तथा मानव विकास के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। भारतीय संस्कृति की विशेषताओं से हमें यह ज्ञाता होता हैं कि लोक के जीवन में जीतनी भी उन्नति हुई हैं वह उन्ही विशेषताओं के आधार पर नापा जा सकता हैं जैसे 'एकता में अनेकता' तथा 'अनेकता में एकता' की बात कही जाती हैं वह प्राचीन कालीन लोक की ही देन है सार्वभौमिकता, सहिष्णुता, आध्यात्मिकता, देवपरयानाता, अर्वान्गीनता 'जन हिताय जन सुखाय' आदि विशेषताओं को भारतीय लोक के जनमानस में दृढ़ हुए दिखाई देते है। जिस प्रकार हड़प्पा संस्कृति का उद्भव हुआ और अनेक प्रकार की सामग्री तथा अलग सी हडप्पा संस्कृति निर्माण हुई जिसने मानव जीवन की सम्पूर्ण विकासात्मक दृष्टी से समायोजन कर हिंदुस्थान की भूमि पर नवीनतम मानवीय सभ्यता की तोफ कड़ी की है । हडप्पा में नगर योजना, कलात्मक मूर्तियों की खोज, मुहरे, लिपि, पशु के कई रूपों का अंकन, देवी देवताओं की पुजा, लिंग एवं योनी की पूजा, जल पूजा, नाग पूजा, वृक्ष पूजा, अनेक संस्कार (जिसमे अंत्येष्टि संस्कार के लिए विशेष ख़ोज के अनुसार अधिक सामग्री पाई गयी है), खान-पान, गाँव की संरचना तथा मनोरंजन के साधन आदि भारतीय लोक को हडप्पा संस्कृति की ही देन कहा जाता हैं। इससे आगे अनेक संस्कृति का निर्माण हुआ है जिसमें वैदिक संस्कृति, जैन तथा बौद्ध संस्कृति आदि। जिनका भारतीय लोक पर परोक्ष या अपरोक्ष रूप से प्रभाव रहा है।

इस प्रकार भारतीय लोक साहित्य में लोक की अवधारणा तथा लोक साहित्य के विभिन्न अंगों को देखा जा सकता है। भारतीय लोक विविध गुणों से युक्त है तथा भारत में लोक की विविधता ही भारत की पहचान है। अनेक धर्म जाति, विविध पंथ आदि भारत भूमि की पहचान है। भारतीय लोक की अपनी एक विचारधारा तथा प्रथा, परम्परा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, वृत-त्योंहार, शादी-ब्याह आदि एक दूसरों से अलग दिखाई देती है। प्रत्येक क्षेत्र विशेष के आधार पर वहाँ की बोली-भाषा, प्रथा-परम्परा, खान-पान आदि आलग होते है। मगर लोक वही पाया जाता है। इतरत्र देश की तुलना में भारतीय संस्कृति को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भारतीय संस्कृति विविधता से बनी है अनेक जाति धर्म के लोगों का वास्तव तथा भाईचारा आदि से भारतीय संस्कृति 'सुजलाम सुफलाम' मानी जाती है। भारत जैसे देश में प्राचीन काल से परिवार में 'वसुदैव कुटुम्बकम' की सत्ता तथा एकता चली आ रही है जो आज भी विद्यमान है। भारतीय लोक के मस्तिष्क में भाईचारा, प्रेम, एकता, माया, ममता आदि है जिससे भारतीय लोक में आतंरिक संबंध पाए हते है। रीति-रिवाज, आपसी रिश्ते जो लोक की अपनी पहचान होती है। एक दूसरों में समन्वय का भाव तथा मदद की भावना जो लोक के आतंरिक निछल स्वाभाव तथा मन को दर्शाती है।

निष्कर्ष:

भारतीय लोक में अनके विविधता को पाया जाता है। लोक में अंधविश्वास की भावना, संस्कृति तथा प्रकृति की रक्षा, आदर्श को स्थापित करना, अनेक घटनाओं का मूल्यांकन करना, मानवीय मूल्य का पालन करना, देवा-देवताओं की पूजा करना, धर्म की रक्षा करना, जातिगत एकता को स्थापित करना, नियमोका कठोर पालन करना, श्रम की भावना, सृष्टि तथा पशु-पक्षियों की रक्षा करना, खान-पान के साधन जुडने में सक्षम, अंधविश्वास तथा बाह्यडम्बर का पुरजोर मात्रा में स्वीकार करना आदि सभी विशेषताएँ भारतीय लोक में पायी जाती है। इनका होना ही भारतीय लोक की पहचान है।

संदर्भ:

1. डॉ. नगेन्द्र- हिंदी साहित्य का इतिहास ले -डॉ. नगेन्द्र & डॉ. हरदयाल पृ. क्र- 210
2. भाष्यकाल- रघुनाथसिंह- राजतारंगिणि तृतीय भाग- पृ. क्र- 4
3. वासुदेव शरण अग्रवाल- पाणिनिकालिन भारतवर्ष, पृ. क्र- 69
4. हिंदी साहित्य कोश भाग-1 सं.मंडल डॉ. धीरेन्द्र वर्मा तथा अन्य
5. अरविंद कुमार- बृहत समांतर कोश - अनुक्रम खंड, हिदी थिसारस- पृ. क्र- 143
6. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली-पृ. क्र- 457
7. डॉ. रविन्द्र भ्रमर- हिंदी भक्ति साहित्य में लोक तत्व-पृ. क्र- 03
8. श्यामसुंदर दुबे – लोक: परम्परा, पहचान एवं प्रवाह पृ. क्र- 118

डॉ. बोईनवाड कृष्णा बाबुराव